

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

by Rakesh Kumar

① सगुण भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख करें।
उत्तर - हिन्दी साहित्य के भक्तिकाव्य को दो वर्गों में विभाजित किया गया है - निगुण भक्तिकाव्य और सगुण भक्तिकाव्य।

सगुण भक्तिकाव्य की निम्न प्रवृत्तियाँ हैं -

(क) ईश्वर के साकार रूप की उपासना - सगुण भक्ति काव्य में ईश्वर के साकार रूप का वर्णन किया गया है। साकार का अर्थ होता है - जिसमें आकार हो, रूप रंग हो। इस भक्तियारा के राम भक्ति काव्य के अन्तर्गत गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में राम को श्यामला व लक्ष्मण को गौरा के रूप में चित्रांकन किया है। कृष्ण भक्तियारा में भगवान् श्री कृष्ण को काला व राधा को गोरी बनाया गया है। इससे स्पष्ट है कि इस भक्तिकाव्य में ईश्वर के साकार रूप की उपासना की अभिव्यंजना हुई है।
(ख) अवतारवाद की अवधारणा

सगुण भक्तिधारा के कवियों ने अपने काव्य में अवतारवाद को महत्व दिया है। इस धारा के भक्त कवियों का मानना है कि भक्तों की रक्षा करने के लिए भगवान विष्णु समय-समय चरती पर अवतार लेते हैं। त्रेता युग में रावण को मारने के लिए भगवान विष्णु रामावतार लिया तथा द्वापर में कंस को मारने के लिए कृष्णावतार लिया।

(ग) गुरु का महत्व — सगुण भक्तिधारा के कवियों ने अपने काव्य में गुरु के महत्व को स्वीकार करने से इनकार नहीं किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने गुरु की महिमा का बखान करके इस लिखा है —

“बंदे गुरु पद पद्म परा गा।”

(घ) अद्वैतवाद का विरोध — सगुण भक्तिकाव्य में अद्वैतवाद का विरोध किया गया है। इस धारा के कवियों ने संसार को क्षणभंगुर नहीं सारयुक्त माना है। सगुण भक्त कवियों में सूरदास का निम्न पद प्रष्टव्य है —

“निगुण कौन देस को वासी
अथाह, जिसे हम जानते ही
नही उसकी पूजा कैसे करें।”